युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 52वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि

साप्ताहिक पुण्यतिथि समारोह : 18 सितम्बर से 24 सितम्बर 2021

कथा

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर । कथा। 20 सितंबर 2021। युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 52 वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि के अवसर पर चल रहे **श्रीमद्भगवतगीता के भारतीय सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में "श्रीराम एवं श्री कृष्ण कथा का तात्विक विवेचन"** विषय पर आज चौथा दिन कथा व्यास अनंत श्रीविभूषित जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्य जी महाराज विद्याभास्कर ने व्यासपीठ से कहा कि भगवान की कथाएं अनेक रहस्य को अपने अंदर समेटे हुए रहती हैं। भगवान का अवतार कई कारणों से होता है। वह अपने भक्तों का उद्धार करने के लिए अवतार लेते। भगवान अपने अवतारों मे स्वयं आचरण करके दिखाते हैं जिससे मनुष्य उसका अनुसरण कर सके। भगवान कहते हैं हमें मानो या ना मानो पर हमारे मानने वाले, हमारे भक्तों पर अपराध करोगे तो निश्चित रूप से दंड पाओगे।

दंड के विषय में बताते हुए कथा व्यास ने कहा यदि दंड नीति ठीक नहीं होगी तो अपराधियों के हौसले बुलंद होंगे। जिनके अपराधों का दंड इसी जन्म में हो जाता है उनको नर्क में जाकर पाप नहीं भोगना पड़ता । इसीलिए हम ऐसा कार्य करें कि दंड और पाप के भागी न बने। हमें जनहित भावना से काम करना चाहिए यदि हम जनहित भावना से रहित होकर काम करेंगे तो हम पराजित होंगे। हमें कभी किसी को नीचा दिखाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए क्योंकि भगवान सबके अंदर विद्यमान है। जो दूसरे को नीचा दिखाने की भावना लाता है वह स्वयं नीचे चला जाता है। भगवान की भक्ति से सफलता मिलने में विलंब हो सकता है किंतु भगवान के भक्तों की भक्ति करने सफलता शीघ्र रूप से और निश्चित होती है। भगवान स्वयं कहते हैं कि मैं भक्तों के अधीन रहता हूं । भक्त जब और जहां बुलाता है भगवान वह तुरंत पहुंचते हैं। ब्राह्मण वही है जो वेद विहित कर्मों को सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय का संकल्प लेकर करता है तथा क्षत्रिय वही है जो ब्राह्मणों के ऐसे संकल्पों को सिद्ध करने के लिए क्षत्रिय धर्म का पालन करता है। भगवान का नाम संकीर्तन करने से लाखों लोग सुधर जाते हैं कह कर उन्होंने लाखों सुधर गए हैं **तेरा नाम रटते–रटते भजन** गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। परम ब्रह्म परमात्मा अजन्मा होते हुए भी अपने भक्तों की कामना पूर्ण के लिए समय–समय पर स्वयं ही अपनी माया के द्वारा पैदा होते हैं। उन्होंने बताया कि गजेंद्र मोक्ष की कथा में गजराज जब ग्राह के द्वारा ग्रसित होता है तो किसी अन्य देवी देवताओं को नहीं बुलाता बल्कि वह कहता है कि जो संपूर्ण लोकों का स्वामी है जो अपने अंश मात्र से ही संपूर्ण संसार का भरण पोषण करता है मैं उनकी शरण में हूँ। इस

प्रकार भगवान गज को बचाने आते हैं तो पहले गजराज को बचाते हैं उसके बाद ग्राह का वध करते हैं। अतिथि सभी का गुरु होता है इसलिए सबसे बड़ा अतिथि होता है। इसलिए अतिथि का सत्कार सदैव करना चाहिए। जब बालक नचिकेता यमराज के यहां जाता है। यमराज के द्वार पर 3 दिन 3 रात प्रतीक्षा करता है। यमराज आए तो पूछते हैं कि आप क्या चाहते हैं तो नचिकता कहता है कि प्रथम दिन में आपकी कीर्ति को खाया दूसरे दिन आपके वैभव को खाया आज तीसरे दिन आपको खाऊंगा। यह सुनकर यमराज थरथर कांपते हैं और उनको मनाते हैं और 3 वरदान देते हैं क्योंकि नचिकेता अतिथि के रूप में आया था और तीसरे दिन यमराज उससे मिलते हैं। इस प्रकार अपने संकल्प से नचिकेता यमराज से ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करता है और उनके सभा में मंत्री पद को सुशोभित करता है।

समुद्र मंथन की कथा सुनाते हुए कथा व्यास ने कहा कि समुद्र मंथन को पूरा कराने के लिए भगवान सबसे पहले कछुए का अवतार लेते हैं। तत्पश्चात वासुकी नाग के अंदर निद्रा अवतार लेते हैं ताकि समुद्र मंथन में वासुकी रस्सी का काम करेंगे जब निद्रा में वासुकी रहेंगे तो उन्हें कष्ट नहीं होगा। इसलिए भगवान अपने प्रत्येक भक्त के कष्ट की चिंता करते हैं। समुद्र मंथन से रत्न के रूप में विष की ज्वाला निकलती है जिसे पीने वाला कोई नहीं था हाहाकार मच गया। तब भगवान विष्णु के आदेश पर देवताओं ने भगवान शिव की स्तुति की महादेव ने अपने योग बल से उस हलाहल को हथेली पर लेकर पी लिया। जो हलाहल विष पीता है वही महादेव होता है। भागवत पुराण में समुद्र मंथन में 11 रत्नों की उत्पत्ति बताई गई है जबकि विष्णु पुराण में 16 रत्नों की उत्पत्ति बताई जाए। भगवान के अंदर सभी सद्गुण विद्यमान होते है। लक्ष्मी जी उन्हीं को सुशोभित करती हैं जो सद्गुणी और उद्योग करने वाला होता है। इसीलिए मंथन से लक्ष्मी जी प्रकट होते हैं इस प्रकार के गुण वाले भगवान विष्णु को ही वराण करती है। जो भी व्यक्ति उद्यमी है सहनशील है लक्ष्मी का कृपा पात्र होता है। समुद्र मंथन के जब अमृत निकलता है तो अमृत सबसे पहले राक्षसों के हाथ लगता है परंतु राक्षस अमृत का पान नहीं कर पाते क्योंकि वहां सुमति नहीं है वहां तो विमती है। हर राक्षस पहले हम पिएंगे पहले हम पिएंगे कह के आपस में झगड़ा करने लगे। जिस समाज में इस तरह की प्रवृत्ति आ जाती है वह समाज कभी प्रगति नहीं करता क्योंकि यह राक्षसी प्रवृत्ति है सात्विक प्रवृत्ति नहीं।

आज की कथा में कथाव्यास ने अंबरीश व दुर्वासा, गज और ग्राह ,नचिकेता और यम, भृगु जी एवं तीनों देवों की परीक्षा, अगस्त ऋषि द्वारा समुद्र का पानी–पीना, मंथन, शिव द्वारा हलाहल पीना जैसे प्रसंगों का तात्विक विवेचन किया।

कथा का समापन आरती और प्रसाद के साथ हुआ। संचालन अरविंद चतुर्वेदी ने किया। इस अवसर पर योगी कमलनाथ जी, महन्त रविन्द्रदास, महन्त पंचानन पुरी, जितेन्द्र बहादुर चन्द, अजय कुमार सिंह, कनकहरि अग्रवाल, महेश पोद्दार, दुर्गेश बजाज, अनिल सिंह सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।